Indian Council of World Affairs
Sapru House, Barakhamba Road
New Delhi

# 23वां सप्रु हाउस व्याख्यान

द्वारा

## महामहिम डॉ. फेयाज तरावनेह

हाशेमाइट किंग्डम ऑफ जार्डन के राजदरबार प्रमुख

विषय

# "आतंकवाद के विरूद्ध वैश्विक युद्ध और मध्य-पूर्व क्षेत्र और उससे परे इसके निहितार्थ"

सप्रु हाउस, नई दिल्ली
7 मार्च 2017

आपके द्वारा दिए गए निमंत्रण और किए गए स्वागत के लिए आपका धन्यवाद।यहां आपके बीच होना और इस संस्था में ऐसे अतिविशिष्ट श्रोताओं के बीच बोलना एक बड़े हर्ष और सम्मान की बात है , यह संस्था महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरोजनी नायडूऔर सर तेई सप्रु जैसे महान लोगों से संबद्ध है जिनके नाम पर इस प्रतिष्ठित भवन (सप्रु हाउस) का नाम पड़ा है।

कई दशकों तक आपका यह परिषद् वार्ता और विचारण के लिए एक प्रभावशाली मंच प्रदान किया है जो इसे एशिया में सबसे प्रमुख विदेश नीति थिंक टैंकों में से एक बनाता है। मैं आशा करता हूं कि मेरी इस यात्रा से मध्य पूर्व के साथ बातचीत में योगदान दे सकती है, क्योंकि परस्पर समझ और सहयोग के लिए अधिक जरूरत नहीं रही है।

जहां मैं स्वयं इस भय से ''परस्पर समझ'' की इस बातचीत से उत्तरोत्तर बचना चाहता हूं कि हाल ही में यह एक रूढोक्ति जैसी ध्वनि के रूप में शुरू हो रहा है, तथापि, मैं यहां एक अपवाद वाला कार्य करने के लिए प्रेरित हुआ हूं, क्योंकि यदि विश्व में कोई भी ऐसा देश है जो इस सिद्धांत को समझ सकता है और जहां सभ्यताओं का परस्पर अंतर्संबंध है और वह लोगों के संबंध , सभ्यता और धर्मों के परिणामस्वरूप फला-फूला तो वह भारत है।

आपके नागरिकों में, मेरा विश्वास है कि विश्व में मुसलमानों की दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या है (1.3 बिलियन में से 180 मिलियन)। इस्लाम और मुस्लिम के साथ आपका अंतर्संबंध हजारों वर्षों पूर्व से है और हम अरबवासी भारत को इस्लाम से भी पहले व्यापार के माध्यम से और उसके बाद में ज्ञान की खोज के संदर्भ में जानते हैं।

वास्तव में, भारत को इस्लाम के स्वर्ण काल में उनके योगदान का पर्याप्त श्रेय नहीं दिया गया है। जहां इतिहास यह दर्शाता है कि यूनानी रचनाओं के अनुवाद कार्य को 9वीं सदी में शुरू किया गया था , वहीं अरब ने भारत की संस्कृत रचनाओं को उससे भी पूर्व शुरू किया था। 771 में बगदाद के खलीफा *सूर्य सिद्धांत* जैसी भारतीय रचनाओं की उत्कृष्टता और आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त की रचनाओं से चकित थे और उन्होंने अलफजारी द्वारा अरबी में अनुवाद का आदेश दिया। किसी सहायता के बिना ही इस कार्य ने स्पेन, सहित सभी मुस्लिम जगत में गणित और विज्ञान के अध्ययन के संबंध में क्रांति ला दी , जहां से यह ज्ञान युरोप पहुंच गया और रोमन अंकों का स्थान लिया। हम प्रतिभाशाली इतिहासकार अलबरूनी द्वारा लिखे गए *किताबुल हिंद* में कई ऐसे अनुवाद भी पाते हैं , जिस इतिहासकार ने ब्राह्मणों के साथ

जीवन बिताया और संस्कृत सीखा तथा भारत से संबंधित अपनी अद्भूत रचना लिखा।

इस लंबे परिचय का आशय इतिहास पाठ के बारे में बतलाना नहीं बल्कि उस संदर्भ के बारे में बतलाना था कि सामूहिक रूप से क्या-क्या प्राप्त किया जा सकता है और एक फोकल बिंदू के बारे में बतलाना जिसके बारे में मैं मानता हूं कि हमें एकबार फिर सहयोग, समझ, ज्ञानआदान-प्रदान और प्रसार के लक्ष्य के साथ एकजुट होना चाहिए ताकि हम दमन अथवा अन्य के भय के बिना एक साथ प्रगति करें।

यह बड़ा दुखद है कि आज हम इसके ठीक उलट प्रभावों को देख रहे हैं और हम इसकी कीमत भी चुका रहे हैं। सीरिया में हम ऐतिहासिक रूप से त्रासदी और विनाश देख रहे हैं। जार्डन में हम इसे और निकटता से देखते हैं जहां जार्डन में 5 लोगों में से कम से कम एक सीरियाई शरणार्थी है।

यह युद्ध केवल यह नहीं है जिसे सीरिया में लड़ा जा रहा है अथवा अंतरराष्ट्रीय गठबंधन इस्लामी अपराधियों के विरूद्ध लड़ रहा है जिसे दायेश के नाम से जाना जाता है बल्कि इस युद्ध को विश्व भर में हृदय और मन मस्तिष्क के लिए लड़ा जा रहा है।

हम इतिहास के इस महत्वपूर्ण मोड़ पर इस सामूहिक चुनौती से कैसे निपटते हैं , इससे हमारे विश्व का भविष्य तय होगा।

आज, कोई भी महाद्वीप आंतक के चाबूक से अछूता नहीं है चाहे उस आंतक का नाम या बैनर कुछ भी हो जिसके तहत वह आतंकी समूह अपना कृत्य कर रहा हो। चाहे वह जर्मनी में क्रिस्मस बाजार को लक्ष्य बना कर किया गया हमला हो, बांग्लादेश में हिंदु पुरोहित पर हमला हो अथवा हजारों मील दूर मेरे अपने गृह नगर में ऐतिहासिक किले पर हमला हो; संदेश स्पष्ट है: यह एक सामूहिक खतरा है जो किसी सीमा और धर्म से जुड़ा नहीं है।

हमें समग्र रूप से एक साथ मिलकर कार्य करना चाहिए; जो एक कारण के लिए हो और इससे से अधिक महत्वपूर्ण है कि इसके मूल कारणों को ढूंढ़ने के लिए कार्य करना चाहिए जिसके कारण यह कैंसर फैलता है, चाहे वह राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक कारण हो अथवा अन्य कोई कारण।

इस वैश्विक युद्ध को जीतना अथवा हारना हमारी सुरक्षा और आने वाली पीढ़ी की जीवन दिशा को

परिभाषित करेगा। इसलिए समकालिक कार्रवाई का कोई विकल्प नहीं है जिसका फोकस संसाधनों पर हो, जो एक वास्तविक वैश्चिक गठबंधन में समन्वित जिम्मेदारियों और द्वैधीकरण का कार्य करे।

हमारी सफलता इस पर कार्य करने की हमारी क्षमता और दिलो दिमाग को जीतने पर टिका हुआ है। इतिहास ने हमें सीखाया है कि युद्ध सैन्य ताकत से जीता जा सकता है किंतु विचारधारा को सुरक्षित किए बिना युद्ध नहीं जीता जा सकता है।

यही बात महामहिम किंग अब्दुल्लाह द्वितीय का कहना है जब उन्होंने पहली बार अरब और मुस्लिम कहा, यह हमारी जिम्मेदारी और कर्तव्य है कि हम इस युद्ध को *खावारेज* अथवा इस्लामी चरमपंथ के विरूद्ध लड़ें। यह युद्ध अपने धर्मों, अपने मूल्यों और अपने लोगों के भविष्य की रक्षा करने के लिए है।

तथापि, शेष दुनिया को इसे भी मानना चाहिए कि यह चरमपंथी 1.7 बिलियन महिला और पुरूषों , जिनमें अच्छे और शिष्ट लोग शामिल हैं, का एक छोटा सा हिस्सा भर है (मानवजाति का एक छोटा सा हिस्सा)। यहां, मैं महात्मा गांधी के कथन को याद करता हूं , ''आपको मानवता के प्रति विश्वास को छोड़ना नहीं चाहिए। मानवता एक महासागर है; यदि महासागर की कुछ बूंदे गंदी हों तो इससे महासागर गंदा नहीं हो जाता है।"

इस युद्ध में सभी लोगों और देशों को एक दूसरे के प्रति साझा सम्मान और सामूहिक क्रिया के लिए साथ आना चाहिए। जार्डन अपना कार्य कर रहा है।

हमें गर्व है कि हम सहिष्णुता और वार्ता के लिए वैश्विक पहलों की अगुवाई कर रहे हैं। अमन के संदेश , साझा शब्द। पांच वर्ष पूर्व हमने लोगों विशेषकर सहिष्णुता और सहअस्तित्व के आधार पर युवाओं के लिए वार्षिक कार्यक्रम संयुक्त राष्ट्र विश्व अंतर्विश्वास सामंजस्य सप्ताह में मनाने में सहायता की।

हम सभी को अपनी भूमिका निभानी है: हमें अपने विश्वासों और संप्रदायों के सार तत्व और साझी भावना पर अवश्य ध्यान केंद्रित करना चाहिए और उनके मूल्यों को अपने दैनिक जीवन में समाकलित करना चाहिए।

हमें भय और घृणा के उपदेशों को बदलने के लिए कार्य करना चाहिए और इसके बदले धैर्य की आवाज

को बुलंद करना चाहिए जो हाल के वर्षों में शोरगुल और अव्यवस्था में कहीं खो गया है।

हमें यह समझना चाहिए कि वास्तविक लड़ाई हर स्थान पर सभी धर्मों में सभी अतिवादियों और भय पैदा करने वालों के विरूद्ध सभी संयमशील लोगों, सभी धर्मों के बीच वास्तविक लड़ाई है।

इस समझ के बिना हम जीत नहीं पाएंगे। आज की हमारी इस अंतर्संबंद्ध दुनिया में ऐसी कोई सीमा नहीं है जहां हम छिप सकें और ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो इस खतरे को अकेले पराजित कर सके।

हमारी एकमात्र आशा समन्वित अंतरराष्ट्रीय कार्रवाई और हमारी सामूहिक मानवता संबंधी कार्य को और बढ़ाना है।

इसका सारगर्भित अर्थ अन्याय , कब्जा, गरीबीऔर असमानता को दूर करना है जो चरमपंथ का मूल कारक है जहां कहीं भी ये कारक पाए जाते हैं।

मध्य-पूर्व में इसका अर्थ कब्जे वाले फिलीस्तीनी लोगों के प्रति अन्याय को समाप्त करना है , इसका तात्पर्य है कि इराक और सीरिया में समावेशी राजनीतिक व्यवस्था हो , इसका आशय है कि दाता देश शरणार्थियों और अपने अतिथियों और उनके लिए जो खतरे का प्रतीक नहीं है , के प्रति अपने वचनों को पूरा करें।

हम फिलीस्तीन-इजराइल विवाद ; मध्य-पूर्व के आधुनिक इतिहास के इस निर्धारक मुख्य संकट जैसे विवादों को समाप्त किए बिना चरमपंथ को प्रभावी तरीके से परास्त नहीं कर सकते हैं।
यह एक भ्रांति है कि यह संकट आईएसआईएस के विरूद्ध लड़ाई के संघर्ष से बाहर है। इस निराशाजनक क्षण में ये समूह स्वयं को शरणार्थी के रूप में देखते हैं ; लगातार उकसावे और अन्याय की भावना के कारण आईएसआईएस और अन्य समूहों को अवसर प्राप्त होता है जिसे हमने हाल के प्रोपेगैंडा वीडियो में देखा है।

चूंकि फिलीस्तीनी-इजराइली संघर्ष को अनसुलझा रखा गया है इसलिए इसके वैश्विक आयाम में एक धार्मिक संघर्ष बनने की संभावना है। इसलिए दो राष्ट्र समाधान वाला दृष्टिकोण हम सभी के लिए प्राथमिकता होनी चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समर्थन प्राप्त दो राष्ट्र समाधान के अतिरिक्त न तो कोई अर्थक्षम और न ही कोई व्यावहारिक समाधान है। यह रूपरेखा कई संयुक्त राष्ट्र संकल्पों और अभूतपूर्व अरब शांति पहल के कारण तैयार हुई है। यह एक ऐसा समय है कि हम शांति प्रक्रिया से प्रगति की ओर अग्रसर हों और अंत में एक समाधान की ओर कदम बढ़ाएं।

इतिहास में कुछ संकट ने ऐसे मिश्रित खतरों को उत्पन्न किया है - जिसमें इससे क्षेत्रीय अस्थिरता और हिंसा को बढ़ावा मिलता है, से लेकर इससे उत्पन्न विश्वव्यापी विभाजन- जिसे चरमपंथियों द्वारा सक्रिय रूप से दोहन किया गया है। हर दिन हम इस संघर्ष के समाधान में अधिक कठिन पाते हैं।

हम सभी का यह कर्तव्य है कि इस संघर्ष के दोनों पक्षों को सोचने में सहायता करें और इन रणनीतिक संदर्भों में कार्य करें। इसका तात्पर्य यह है कि हम इस पर ध्यान केंद्रित करें कि दोनों पक्ष क्या चाहते हैं- दस, बीस, तीस वर्षों या इससे अधिक समय में ; स्वयं उनके और उनके बच्चों के लिए आशा और आकांक्षाओं के लिए- और उसके बाद उस भविष्य की दिशा में कार्य करें।

हमारी ओर से कार्रवाई होगी उससे यह संदेश देने की शक्ति हो सकती है। संकेत दिए जाते हैं जब हम पश्चिमी तट पर रह रहे लोगों के जीवन की दैनिक कठिनाइयों.... अवैध बने बसावट के विरूद्ध... ऐसी कोई कार्रवाई जिससे मुस्लिम और इसाई के पवित्र स्थलों को खतरा हो , के लिए कार्य करते हैं या कार्य करने में असफल होते हैं;और इससे धार्मिक युद्ध चाहने वाले युद्ध भड़काते हैं।

एकपक्षीय उपाय जिससे अंतिम स्थिति वाले मुद्दों के परिणाम को प्रभावित करता है , का भयानक परिणाम हो सकता है। येरूसलेम में जो होता है, वह येरूसलेम में ही नहीं टिका रहता है और उसमें विश्व के करोड़ों लोगों को उकसाने और भड़काने की क्षमता रखता है। विश्व के अन्य स्थानों की तरह इस पवित्र शहर में हमलोगों को एकजुट करने की क्षमता है और उसी रूप में अधिक संकट के साथ हमें निगलने की भी क्षमता है।

इस प्रकार पवित्र स्थल पर हाशमी अभिरक्षा जार्डन के प्रमुख राष्ट्रीय नीतिगत प्राथमिकताओं में से एक है। हम इस जिम्मेदारी को न केवल धार्मिक और ऐतिहासिक पहलू से बल्कि यह एक सोख्तादान के रूप में गंभीरता पूर्वक लेते हैं जिसमें वैश्विक स्तर पर सुरक्षा को प्रभावित करने की क्षमता है।

जहां मध्य-पूर्व शांति प्रक्रिया को "न किए जाने वाले समझौते " के रूप में उल्लेख किया गया है , वहीं इजराइलके साथ एक शांति संधि को अंतिम रूप देने वाली जार्डन के समझौता दल के एक हिस्से के रूप में अपने अनुभव के आधार पर आपको मैं बता सकता हूं कि कल का शत्रु आने वाले कल का मित्र बन सकता है, और इसे राजनीतिक इच्छाशक्ति और साहस के साथ दुहराया जा सकता है।

इसी इच्छाशक्ति की इराकी राष्ट्रीय एकीकरण ; प्रभावहीनता को समाप्त करने का एक माध्यम जिसके कारण आतंकवाद को बल मिला है, जैसे मुद्दों पर आगे बढ़ने के लिए भी आवश्यकता होगी। जार्डन इस लक्ष्य में सहायता देने के प्रयासों में अग्रणी रहा है और चाहता है कि कुछ सप्ताह बाद ओमान में होने वाले अरब शिखर सम्मेलन में एक मुख्य एजेंडे के रूप में इसे प्राथमिकता प्रदान की जाए।

जार्डन अपने क्षेत्र को स्थिर बनाए रखने और अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में मुख्य कार्यकर्ता देश के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए जो कुछ कर सकता है, वह करना जारी रखेगा। किंतु यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा ऐसे ही मानकर चलना चाहिए। हमें महत्वपूर्ण कार्य , जो हमारे समक्ष है , को जारी रखने और इस क्षेत्र के शेष देशों को दिखाने के लिए वैश्विक समर्थन की आवश्यकता है कि आशा है और विभिन्न विकल्प भी मौजूद हैं।

मुझे विश्वास है कि यदि हम उन कार्यों को करें जिन्हें किया जाना आवश्यक हो तो नकाब हट जाएगा तथा मन-मस्तिष्क जीता जा सकता है; विस्तारित रक्षा बजटों को आतंक का निर्माण करने वाले कारकों यथा गरीबी, युवा, बेरोजगारी और अशिक्षा को समाप्त करने के लिए लगाया जा सकता है। इसका अंतिम परिणाम सुरक्षा, स्थिरता होगी और मध्य पूर्व आतंकी घटनाओं की अपेक्षा मानवता के प्रति पुन: अधिक योगदान दे सकता है।

रास्ता बहुत लंबा और कठिन है किंतु यदि साहस हो तो यह असंभव नहीं है। मैं आश्वस्त हूं कि हम एक साथ मिलकर इसे कर सकते हैं और हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचना चाहिए जो विश्व के लोगों के लिए सुरक्षित, मजबूत भविष्य हो।

आपका धन्यवाद।

***